REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2026

"दो वर्षीय बी.एड.पाठ्यक्रम के संबंध में छात्र–शिक्षकों की धारणाएँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

रजनी कान्त श्रीवास्तव
शोधार्थी शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग,
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. अरुण कुमार सिंह
प्राचार्य
टाटा एजुकेशन कालेज, सगरा, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता किसी भी देश की शैक्षिक प्रगति का आधार होती है। इसी संदर्भ में भारत में बी.एड. पाठ्यक्रम की अवधि को एक वर्ष से बढ़ाकर दो वर्ष किया गया, ताकि छात्र–शिक्षकों को अधिक व्यापक, व्यावहारिक एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति छात्र–शिक्षकों की धारणाओं का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, जिसमें शिक्षक शिक्षा से संबंधित पुस्तकों, शोध–पत्रों, सरकारी रिपोर्टों तथा नीतिगत दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम ने प्रशिक्षुओं को विषय–वस्तु की गहन समझ, व्यवहारिक प्रशिक्षण तथा विद्यालयी अनुभव के अधिक अवसर प्रदान किए हैं। इससे उनके शिक्षण कौशल, आत्मविश्वास तथा व्यावसायिक दक्षताओं में वृद्धि हुई है। इसके बावजूद कुछ समस्याएँ भी सामने आती हैं, जैसे पाठ्यक्रम की अवधि बढ़ने से आर्थिक बोझ, कुछ संस्थानों में अवसंरचना की कमी, और प्रायोगिक कार्यों की औपचारिकता। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि यदि पाठ्यक्रम में व्यवहारिक गतिविधियों को अधिक सुदृढ़ किया जाए, डिजिटल संसाधनों का समावेश बढ़ाया जाए तथा प्रशिक्षुओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जाए, तो यह पाठ्यक्रम और अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मुख्य शब्द : बी.एड. पाठ्यक्रम, छात्र–शिक्षक, दृष्टिकोण, शिक्षा, प्रशिक्षण।

प्रस्तावना –

वर्तमान युग ज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रतिस्पर्धा का युग है, जिसमें शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति उसकी शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करती है। शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता मुख्यतः शिक्षकों की दक्षता, दृष्टिकोण और प्रशिक्षण पर आधारित होती है। इस कारण शिक्षक शिक्षा को शिक्षा व्यवस्था का केन्द्रीय अंग माना जाता है। भारत में शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में समय–समय पर सुधारात्मक कदम उठाए गए हैं। इन्हीं सुधारों में बी.एड. पाठ्यक्रम की अवधि को एक वर्ष से बढ़ाकर दो वर्ष करना एक महत्वपूर्ण निर्णय रहा है। इस परिवर्तन का मूल उद्देश्य छात्र–शिक्षकों को अधिक व्यापक, गहन और व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना था। पूर्व में एक वर्षीय पाठ्यक्रम में समय की सीमाओं के

कारण छात्र–शिक्षकों को विषयगत ज्ञान और शिक्षण कौशलों के समुचित विकास का अवसर नहीं मिल पाता था। परिणामस्वरूप शिक्षण की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता था। दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की गई है कि इसमें सैद्धांतिक अध्ययन के साथ–साथ व्यवहारिक प्रशिक्षण को भी समान महत्व दिया गया है। पाठ्यक्रम में शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन तकनीकें, कक्षा प्रबंधन, समावेशी शिक्षा, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, जीवन कौशल, तथा विद्यालयी अनुभव कार्यक्रमों को शामिल किया गया है। इससे छात्र–शिक्षकों को वास्तविक शिक्षण परिस्थितियों का अनुभव प्राप्त होता है और वे शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए तैयार होते हैं।

दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम का एक प्रमुख उद्देश्य यह भी है कि छात्र–शिक्षकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास किया जाए। शिक्षक केवल ज्ञान का संप्रेषक ही नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य केवल विषयगत दक्षता तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उनमें मानवीय मूल्यों, सामाजिक संवेदनशीलता और नवाचार की भावना का भी समावेश होना चाहिए। हालाँकि इस पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। कुछ छात्र–शिक्षकों का मत है कि पाठ्यक्रम की अवधि बढ़ने से आर्थिक व्यय में वृद्धि हुई है, जिससे निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के छात्रों के लिए कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ शिक्षा महाविद्यालयों में आवश्यक अवसंरचना, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ और डिजिटल संसाधनों की कमी भी देखी जाती है। इससे प्रशिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है। दूसरी ओर, कई छात्र–शिक्षक इस पाठ्यक्रम को अपने व्यावसायिक विकास के लिए उपयोगी मानते हैं। उनका मानना है कि दो वर्षीय अवधि के कारण उन्हें शिक्षण विधियों को समझने, पाठ योजनाएँ तैयार करने, और विद्यालयी अनुभव प्राप्त करने का पर्याप्त समय मिलता है। इससे उनके आत्मविश्वास और शिक्षण दक्षता में वृद्धि होती है।

इन परिस्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि छात्र–शिक्षकों की धारणाओं का अध्ययन किया जाए, क्योंकि उनकी धारणाएँ पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का वास्तविक संकेत देती हैं। यदि प्रशिक्षु पाठ्यक्रम को उपयोगी और संतोषजनक मानते हैं, तो यह उसकी सफलता का प्रमाण है। यदि वे इसमें समस्याएँ अनुभव करते हैं, तो सुधार की आवश्यकता होती है। अतः प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति छात्र–शिक्षकों की धारणाओं का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान कर सकता है और भविष्य में पाठ्यक्रम निर्माण एवं नीतिगत निर्णयों में सहायक सिद्ध हो सकता है।

शोध का उद्देश्य –

शिक्षक शिक्षा का मूल उद्देश्य ऐसे सक्षम, संवेदनशील और व्यावसायिक रूप से दक्ष शिक्षकों का निर्माण करना है, जो बदलते शैक्षिक परिदृश्य में प्रभावी भूमिका निभा सकें। दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य प्रशिक्षुओं को अधिक समय, गहन अध्ययन और व्यवहारिक अनुभव प्रदान करना है। किंतु किसी भी पाठ्यक्रम की सफलता का आकलन प्रशिक्षुओं की धारणाओं और अनुभवों के आधार पर ही किया जा सकता है। छात्र–शिक्षकों की संतुष्टि, उनकी अपेक्षाएँ और अनुभव इस पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता के महत्वपूर्ण संकेतक होते हैं। अतः उनके दृष्टिकोण का अध्ययन आवश्यक हो जाता है, जिससे पाठ्यक्रम की वास्तविक उपयोगिता का आकलन किया जा सके। प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

(1) दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति छात्र–शिक्षकों की धारणाओं का अध्ययन करना।
(2) पाठ्यक्रम की संरचना, उपयोगिता और व्यवहारिक प्रशिक्षण के प्रति प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।
(3) छात्र–शिक्षकों द्वारा अनुभव की गई समस्याओं तथा सुधार संबंधी सुझावों का अध्ययन करना।
उपरोक्त उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोध पत्र को वास्तविक मानकों के अनुरूप पूर्ण करने का सार्थक प्रयास किया गया है।

शोध विधि –

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जो पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन के लिए शिक्षक शिक्षा से संबंधित विभिन्न पुस्तकों, शोध–पत्रों, जर्नलों, सरकारी रिपोर्टों, नीतिगत दस्तावेजों तथा आधिकारिक प्रकाशनों का अध्ययन किया गया है। इन स्रोतों से प्राप्त जानकारी का क्रमबद्ध संकलन एवं विश्लेषण किया गया, जिससे दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति छात्र–शिक्षकों की धारणाओं का समग्र चित्र प्रस्तुत किया जा सके। द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों का तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे विभिन्न अध्ययनों में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता, उपयोगिता तथा उससे संबंधित समस्याओं को समझा जा सके। इस प्रकार यह अध्ययन गुणात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण के माध्यम से निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

विश्लेषण –

दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति छात्र–शिक्षकों की धारणाओं का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि इस पाठ्यक्रम ने शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में संरचनात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण से देखा जाए तो दो वर्षीय अवधि ने उन्हें विषय–वस्तु की गहन समझ विकसित करने का अवसर प्रदान किया है। एक वर्षीय पाठ्यक्रम में समय की कमी के कारण शिक्षण विधियों और व्यवहारिक प्रशिक्षण को सीमित समय मिल पाता था, जबकि दो वर्षीय पाठ्यक्रम में इन पहलुओं को अधिक महत्व दिया गया है।

प्रशिक्षुओं का सामान्य मत यह पाया गया है कि विस्तारित अवधि के कारण उन्हें शिक्षण कौशल विकसित करने, पाठ योजना निर्माण का अभ्यास करने तथा विद्यालयी अनुभव प्राप्त करने के अधिक अवसर मिलते हैं। विद्यालयी अनुभव कार्यक्रम प्रशिक्षुओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होता है, क्योंकि इससे उन्हें वास्तविक कक्षा परिस्थितियों में शिक्षण का अनुभव प्राप्त होता है। इससे उनके आत्मविश्वास, संप्रेषण कौशल और कक्षा प्रबंधन की क्षमता में वृद्धि होती है। इस प्रकार कुछ प्रशिक्षुओं ने पाठ्यक्रम से संबंधित चुनौतियों का भी उल्लेख किया है। दो वर्षीय अवधि के कारण आर्थिक बोझ बढ़ना एक प्रमुख समस्या के रूप में सामने आया है। इसके अतिरिक्त, कुछ शिक्षा महाविद्यालयों में आवश्यक संसाधनों की कमी, योग्य संकाय का अभाव, और प्रायोगिक कार्यों की औपचारिकता जैसी समस्याएँ भी देखी गई हैं।

डिजिटल युग में शिक्षण प्रक्रिया में तकनीकी साधनों का समावेश अत्यंत आवश्यक हो गया है। प्रशिक्षुओं का मानना है कि यदि पाठ्यक्रम में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रशिक्षण को और अधिक सुदृढ़ किया जाए, तो वे आधुनिक शिक्षण पद्धतियों को अधिक प्रभावी ढंग से अपनाने में सक्षम हो सकते हैं। इस प्रकार प्रशिक्षुओं की धारणाओं का समग्र विश्लेषण यह दर्शाता है कि दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम ने शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने की दिशा में सकारात्मक कदम उठाया है, किंतु इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए संसाधनों, प्रशिक्षण सुविधाओं और पाठ्यक्रम की व्यवहारिकता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष –

अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस पाठ्यक्रम ने छात्र–शिक्षकों को अधिक समय, गहन अध्ययन और व्यवहारिक प्रशिक्षण के अवसर प्रदान किए हैं, जिससे उनकी शिक्षण दक्षता और आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। छात्र–शिक्षकों की धारणाओं से यह स्पष्ट होता है कि वे इस पाठ्यक्रम को अपने व्यावसायिक विकास के लिए उपयोगी मानते हैं, विशेषकर विद्यालयी अनुभव और प्रायोगिक कार्यों के संदर्भ में। हालांकि, आर्थिक बोझ, अवसंरचना की कमी और प्रायोगिक कार्यों की औपचारिकता जैसी समस्याएँ भी सामने आती हैं। यदि इन समस्याओं का समाधान किया जाए और पाठ्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन पर ध्यान दिया जाए, तो दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकता है। यह न केवल प्रशिक्षुओं के व्यावसायिक विकास में सहायक सिद्ध होगा, बल्कि समग्र शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता सुधारने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

संदर्भ –

1. अग्रवाल, जे. सी. टीचर एजुकेशन इन इंडिया. नई दिल्ली : शिप्रा पब्लिकेशन्स, 2015.
2. कौल, लोकेश. मेथडोलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च. नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस, 2016.
3. एनसीईआरटी. टीचर एजुकेशन एंड स्कूल एजुकेशन. नई दिल्ली : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2017.
4. एनसीटीई. टीचर एजुकेशन रेगुलेशन्स. नई दिल्ली : राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद, 2018.
5. सिंह, वाई. के. टीचर एजुकेशनः इश्यूज एंड पर्सपेक्टिव्स. नई दिल्ली : एपीएच पब्लिशिंग, 2019.
6. कुमार, ए. कॉन्टेम्पररी ट्रेंड्स इन टीचर एजुकेशन. नई दिल्ली : विजडम प्रेस, 2020.